RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

जनपद प्रतापगढ (उ0प्र0) के भौतिक एवं सांस्कृतिक स्वरुप का विवेचन

डॉ0 मनोराज पाल

असिस्टेन्ट प्रो0–भूगोल विभाग स्व0रामराज वर्मा महावि0 सारंगपुर, सुलतानपुर(उ0प्र0)

ईसा की सत्रहवीं सदी में प्रताप सिंह यहाँ के राजा थे। उनका मुख्यालय रामपुर था। सन् 1858 में प्रतापगढ़ जिले का गठन हुआ जिसका मुख्यालय वेला था। जो बाद में वेला प्रतापगढ़ हो गया। सई नदी के किनारे स्थित वेला भवानी के मन्दिर के चलते इसका नाम बेल्हा पड़ा। वर्तमान में इस जिले को प्रतापगढ़ के नाम से जाना जाता है।

प्रतापगढ़ जनपद का अंक्षाशीय विस्तार 25^0 34^0 उत्तरी अक्षांश से 26^011^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81^019^0 पूर्वी देशान्तर से 82^027^0 पूर्वी देशान्तर के मध्य है। भौगोलिक दृष्टि से यह फैजाबाद मण्डल के दक्षिण तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व दक्षिण में स्थित है। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम 105 किमी0 तथा उत्तर से दक्षिण 60किमी0 है। केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन के अनुसार इस जिले का क्षेत्रफल 3717 वर्ग किमी0 है। गंगा नदी के कटाव एवं पटान के कारण इसके क्षेत्रफल में बदलाव आता रहता है। गंगा नदी जनपद के दक्षिण–पश्चिम में 50 किमी0 की सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है।

इस जनपद के उत्तर में सुलतानपुर जनपद दक्षिण में इलाहाबाद जनपद पूर्व में जौनपुर जनपद एवं पश्चिम में रायबरेली जनपद स्थित है। प्रशासनिक दृष्टि से यह जनपद 5 तहसीलों, 17 विकासखण्डों तथा 2219 राजस्व ग्रामों में विभक्त है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार इस जिले की कुल जनसंख्या 27.20 लाख है।

भौमिकीय संरचना एवं उच्चावच :–

जनपद के सम्पूर्ण क्षेत्रफल के अध्ययन से पता चलता है कि यह क्षेत्र उपजाऊ एवं कृषि योग्य है। धरातलीय संरचना के निर्माण में सई एवं गंगा नदियों का महत्वपूर्ण योगदान है। सई नदी के किनारे निचले भागों में खादर मृदा का विस्तार पाया जाता है। जनपद के कुछ ही भागों में ऊसरी

मृदा मिलती है। सई नदी के दोनों किनारे वाले भाग वनाच्छादित हैं तथा ये भाग अधिक ऊबड़–खाबड़ हैं। कहीं–कहीं साधारण ऊँचाई के टीले और गड्ढे हैं। इन गड्ढों में चिकनी मृदा पायी जाती है।

जल प्रवाह प्रणाली :–

अध्ययन क्षेत्र की जलप्रवाह प्रणाली उच्चावच एवं धरातलीय ढाल के द्वारा नियन्त्रित है। यहाँ उत्तरी भारत की प्रमुख नदी गंगा है जो अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी–पश्चिमी सीमा पर बहती है। सई नदी अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख नदी है। अध्ययन क्षेत्र की गंगा नदी प्रमुख नदी है। यह नदी अध्ययन क्षेत्र के मुरासपुर गांव से होती हुई मानिकपुर परगना, कालाकांकर का किला, मानिकपुर के पुराने कस्बे और गुटनी तथा दक्षिण विहार की सीमा को छूते हुए जहानाबाद पहुँचती है। यह नदी मुरासपुर से गुटनी तक पुराने संकरे मार्ग से होती हुई मानिकपुर किले के पास एक ऊँची धारा के रुप में गिरती है। गुटनी में 9 से 24 किमी0 तक नये खादर मृदा का निर्माण करती है जो कि बहुत संकरी पट्टी के रुप में विस्तृत है। इसके निचले भागों में झाऊ के जंगल मिलते हैं। यह क्षेत्र कृषि एवं पशुचारण के उपयोग में लाया जाता है। गंगा नदी के किनारे वाले भू–भाग सई और उसकी सहायक नदियों की अपेक्षा समतल एवं अधिक उपजाऊ है। ढलानों के लगभग 3/4 भू–भाग पर तम्बाकू की कृषि होती है।

गोमती नदी शहर के उत्तर पूर्वी भाग में लगभग 6 किमी0 की सीमा बनाती हुई बहती है। यह एक बड़ी एवं नौकागमन के लिये उपयुक्त नदी है। इसके अलावा छैया,लोनी,सरकनी, बलुकही आदि नदियां जनपद में प्रवाहित होती हैं।सई नदी गोमती की सहायक नदी है जो कि जौनपुर में गोमती से मिल जाती है। यह नदी हरदोई के उत्तरी भाग से निकलकर लखनऊ, उन्नाव और रायबरेली जिलों से होते हुये प्रतापगढ़ में मुस्तफाबाद के पश्चिम हथेया से प्रवेश करती है। प्रतापगढ़ से जौनपुर तक यह नदी 72 किमी0 की यात्रा कर चुकी होती है।

सई नदी की कई प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण नैया नदी है। यह नदी रायबरेली जिले से निकलकर हथेया परगना के उत्तर से दक्षिण दिशा में बहती हुई सई नदी से मिल जाती है।

नैया के पश्चिम में लगभग 80 किमी0 दूर कैमूर नदी, सई नदी से मिल जाती है। कैमूर नदी सुलतानपुर जिले से एक पतली धारा के रूप में निकलती है और पट्टी के उत्तर पश्चिम भाग से प्रवाहित होती हुई प्रतापगढ़ परगना में बालाघाट के पास सई नदी से मिल जाती है।

जलाशय :–

अध्ययन क्षेत्र में जहाँ एक तरफ वर्षा की अधिकता है वहीं दूसरी तरफ ढाल भी मन्द है। इस क्षेत्र की संरचना में कोमल शैलों का वर्चस्व है, इसी कारण नदी नालों द्वारा मृदा का अपरदन आसानी से हो जाता है। इन्ही प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक जलाशयों की कमी नही है। तहसील पट्टी की सबसे बड़ी झील नैरेहरा झील है जो कि 10 वर्ग किमी0 क्षेत्र में फैली हुई है और यह कभी सूखती नही है। इसी तरह दूसरी अन्य झीलें शाहपुर, अधारगंज, दौदपुर अटारसंघ और सकरा में फैली हैं। प्रतापगढ़

RRIJM 2015, All Rights Reserved

तहसील में मिलने वाली प्रमुख झीले रंगोली सिरसी व जेठवारा के पास नेवारी हैं जो कि पर्याप्त मात्रा में जल का संग्रह करती हैं। कुण्डा तहसील में झीलों का विस्तार असाधारण रुप में मिलता है।

वेती झील :–

द्वार और गंगा के मध्य निचले भू–भाग में स्थित झील को वेती झील के नाम से जानते है। इसका विस्तार 18 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर मिलता है। उत्तर–पश्चिमी एवं पूर्वी भाग की सीमा 10–30 फिट ऊँची है। दक्षिणी भाग सकरा एवं निम्न भू–भाग है जो झील को गंगा खादर से अलग करती है। जब गंगा नदी में बाढ़ आती है तो झील का जलस्तर 15 से 20 फिट ऊपर उठ जाता है। प्राचीन काल में इस झील का उपयोग प्रमुख जलस्रोत के रुप में किया जाता था किन्तु वर्तमान में इसका उपयोग कम है।

जलवायु :–

प्रकृति के विभिन्न तत्वों में जलवायु अपनी प्रमुख विशेषताओं एवं भौतिक तथा जैविक संसार में उच्च प्रभावों के कारण अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।यहाँ मानसूनी हवाओं का वर्चस्व है। इन्हीं हवाओं के प्रभाव के कारण यहाँ वर्ष में चार ऋतुएं पायी जाती हैं :–

(1) शीतकाल – 15 नवम्बर सं 15 फरवरी तक
(2) ग्रीष्मकाल – 15 फरवरी से 15 जून तक
(3) वर्षाकाल –15 जून से 15 सितम्बर तक
(4) मानसून निवर्तन काल – 15 सिम्बर से 15 नवम्बर तक।

वर्षा :–

अध्ययन क्षेत्र में वर्षा मापन के तीन केन्द्र प्रतापगढ़ पट्टी तथा कुण्डा हैं। पिछले 90 वर्षों के रिकार्ड के अनुसार औसत वार्षिक वर्षा 977.9 मिमी0 से 996.9 मिमी0 के मध्य है। अध्ययन क्षेत्र में कुल वर्षा का 89 प्रतिशत भाग दक्षिणी–पश्चिमी मानसूनी हवाओं द्वारा वर्ष के 04 महीनों (जून सें सितम्बर) में होती है। सन् 1901 से 1950 तक अधिकतम वार्षिक वर्षा 1915 में प्राप्त हुई जो सामान्य से 143 प्रतिशत अधिक थी। सन् 1908 में न्यूनतम वार्षिक वर्षा रिकार्ड की गयी जो सामान्य से 62 प्रतिशत कम थी। 27 अगस्त 1903 में प्रतापगढ़ में 24 घण्टे के अन्दर सबसे ज्यादा वर्षा 355.6 मिमी0 हुई थी।

तापमान :–

अध्ययन क्षेत्र का औसत वार्षिक तापमान 26^0 से0ग्रे0 है। फरवरी माह के बाद अध्ययन क्षेत्र का तापमान तेजी से बढ़ने लगता है। मई में अधिकतम् तापमान 42^0 से0ग्रे0 तथा न्यूनतम् तापमान 27^0 से0ग्रे0 पाया जाता है। मई और जून माह में मानसून आने के पूर्व अधिकतम् तापमान 46^0 से0ग्रे0 तक पहुँच जाता है। अक्टूबर के बाद दिन व रात के तापमान में धीरे–धीरे गिरावट होने लगती है। जनवरी समान्यतः सबसे ठण्डा माह होता है। इस समय अधिकतम तापमान 24^0से0ग्रे0 तथा न्यूनतम तापमान 9^0 से0ग्रे0 पाया जाता है। जब इस प्रदेश में ठण्डी हवायें प्रवेश करती हैं तो तापमान गिरकर काफी नीचे तक पहुँच जाता है और कुहरा, पाला, तुषार, पड़ने लगता है।

मिट्टी :–

मिट्टी मानव की एक अमूल्य सम्पदा है क्योंकि मिट्टी पर आधारित कृषि व्यवस्था पर ही अधिकांश जनसंख्या का जीवन निर्भर है। अध्ययन क्षेत्र में विस्तृत रूप से जलोढ़ व दोमट मिट्टियाँ पायी जाती हैं जिनमें क्षेत्रीय स्तर पर मिट्टी के किस्मों में पर्याप्त भिन्नता मिलती है। मोटे तौर पर सम्पूर्ण क्षेत्र की मिट्टी का वर्गीकरण मुख्य रूप से उनकी संरचना के आधार पर किया गया है। जैसे–मृतिका एवं बालू के मिश्रण वाली मिट्टियाँ क्षेत्रीय भाषा में मटियार के नाम से जानी जाती है। इस मिट्टी में जल को रोकने की क्षमता अधिक होती है। सामान्य उर्वरता एवं उत्पादन स्तर पर मिट्टी का वर्गीकरण करने के लिये गाँव से खेत की दूरी तथा खेत में खाद की मात्रा पर निर्भर करता है। इस आधार पर तीन संकेन्द्रीय वलय पाये जाते हैं :–

(1) गोयड़ : अधिक उर्वर मृदा
(2) मेझर : उर्वरता गोयड़ की अपेक्षा कम
(3) पीली : उर्वरता बहुत कम

प्राकृतिक वनस्पति :–

प्राकृतिक वनस्पतियाँ जलवायु और मिट्टियों का सम्मिलित प्रतिफल होती हैं। किसी प्रदेश की वनस्पति को देखकर ही वहाँ की जलवायु तथा मृदा का अन्दाजा लगाया जा सकता है।[5] अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश भागों में जंगली वृक्षों एवं झाड़ियों का विस्तार मिलता है। जंगली भागों का उपयोग चारागाह के रूप में किया जाता है। सई नदी के किनारे ढलानों पर बबूल, शीशम, ढाक आदि के वृक्ष मिलते हैं। अध्ययन क्षेत्र इमारती लकड़ियों एवं झाड़ियों से ढका हुआ है। जंगल विभाग का नियन्त्रण 401 हे0 भूमि पर है जिसमें 277 हे0 प्रतापगढ़ तहसील में, 107 हे0 कुण्डा तहसील में और 17 हे0 भूमि पट्टी तहसील में आता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल 15735 हे0 भूमि पर वन पाये जाते हैं, जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.36 प्रतिशत है।

भूमि उपयोग :–

भूमि उपयोग प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक प्रतिक्रिया का फल है, जो क्षेत्र की प्राकृतिक संरचना, मानव की बौद्धिक क्षमता, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास व अन्य प्राकृतिक तत्वों यथा तापमान, जल, वनस्पति, आदि के अन्तःक्रिया का परिणाम है।[6] भूमि उपयोग की उत्कृष्टता मानवीय विवेक एवं उसकी पहुँच पर निर्भर करती है। जनपद प्रतापगढ़ में भूमि उपयोग प्रतिरूप को प्रस्तुत करता है जो कि वर्ष 2008–2009 के औसत आकड़ों पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग निम्न तालिका से भी स्पष्ट होता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

जनपद प्रतापगढ़ में भूमि उपयोग क्षेत्रफल (प्रतिशत में)

विकासखण्ड का नाम	वन	कृषि योग्य बंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	ऊसर एवं कृषि उपयोग भूमि	कृषि के उतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह	वनों उद्यानों एवं वृक्षों के अन्तर्गत भूमि	शुद्ध कृषित भूमियाँ
कालाकांकर	–	3.36	13.39	5.17	2.26	13.15	0.04	2.63	59.42
बाबागंज	0.07	2.31	22.14	2.41	5.04	12.28	0.26	2.54	52.31
कुण्डा	0.00	3.20	18.36	7.28	3.75	10.00	0.05	4.01	53.31
बिहार	0.01	3.11	20.22	1.46	3.49	12.51	0.23	3.83	55.11
सागीपुर	0. 003	1.52	16.83	0.64	1.95	10.07	0.15	4.23	64.56
लालगंज	0.17	2.60	1.95	3.23	3.36	9.67	0.15	4.05	55.76
लक्ष्मणपुर	0.41	0.72	20.22	7.01	2.11	9.35	0.44	10.62	54.22
सद्धा चन्द्रिका	0.35	2.35	2.55	4.03	1.55	10.66	0.18	5.54	70.48
प्रतापगढ़ सदर	0.28	2.49	10.81	2.93	1.28	9.19	0.09	4.63	65.29
मान्धाता	0.32	2.56	6.11	3.29	1.81	10.80	0.23	5.32	72.00
मगरौरा	0.23	2.17	9.59	5.37	1.42	11.79	0.15	3.00	65.37
पट्टी	0.11	1.72	8.37	5.43	1.74	11.35	0.20	4.37	67.21
आसपुर देवसरा	0.20	1.47	6.93	5.45	1.77	11.10	0.19	3.91	69.90
शिवगढ़	0.10	1.55	10.04	0.77	1.78	9.50	0.09	4.44	71.70
गौरा	0.18	1.35	11.66	1.23	3.16	11.36	0.22	3.13	67.66
रामपुर संग्रामगढ़	0.06	1.66	17.83	3.82	4.47	11.23	0.21	1.04	59.65
बाबा बेलखरनाथ	0.27	13.61	13.61	5.63	0.47	9.75	0.13	8.23	60.75

शस्य प्रतिरूप :–

जनपद प्रतापगढ़ में शस्य प्रतिरूप के क्षेत्रीय विश्लेषण से दृष्टिगत होता है कि गेहूँ जनपद के कुल बोये क्षेत्रफल के सर्वाधिक भाग (46 प्रतिशत) पर बोया गया है। इसके अतिरिक्त चावल, दालें, बाजरा, आलू, सब्जियाँ तिलहन एवं अन्य का प्रतिशत क्रमशः 32, 9, 4, 2, 2, 1, 4 है। जनपद में चावल की खेती सर्वाधिक विकासखण्ड रामपुर संग्रामगढ़ (44. 11 प्रतिशत) तथा सबसे कम विकासखण्ड प्रतापगढ़ सदर (8. 15 प्रतिशत) में की जाती है। गेहूँ के वितरण की विभिन्नता 48.58 प्रतिशत रामपुर संग्रामगढ़ विकासखण्ड में 26.50 प्रतिशत प्रतापगढ़ सदर विकासखण्ड में मिलता है। जौ सर्वाधिक विकासखण्ड शिवगढ़ (1.05 प्रतिशत) एवं सबसे कम (0.07 प्रतिशत) विकासखण्ड गौरा तथा ज्वार सर्वाधिक सांगीपुर विकासखण्ड में (4.02 प्रतिशत) एवं सबसे कम बिहार (0.23 प्रतिशत) में बोया जाता है। बाजरे की कृषि सर्वाधिक 14.41 प्रतिशत विकासखण्ड प्रतापगढ़ सदर में तथा सबसे कम रामपुर संग्रामगढ़ 0.23 प्रतिशत की जाती है। सर्वाधिक मक्के की कृषि विकासखण्ड आसपुर देवसरा (3.32प्रतिशत) तथा सबसे कम कालाकांकर, बाबागंज, कुण्डा, बिहार व लालगंज विकासखण्डों में की जाती है। अर्थात् इन विकासखण्डों में इसकी कृषि न के बराबर होती है। दालें सर्वाधिक प्रतापगढ़ सदर विकासखण्ड (16.78 प्रतिशत) एवं सबसे कम पट्टी विकासखण्ड 3.75 प्रतिशत में उगायी जाती है। आलू की सर्वाधिक कृषि मान्धता विकासखण्ड में (2.28 प्रतिशत) तथा सबसे कम (1.01 प्रतिशत) लक्ष्मणपुर में की जाती है। इसी प्रकार गन्ने की खेती सर्वाधिक विकासखण्ड आसपुर देवसरा (2.01 प्रतिशत) में एवं सबसे कम प्रतापगढ़ सदर (0.03 प्रतिशत) में की जाती है।

शस्य क्रम गहनता :–

शस्य गहनता किसी भूमि पर फसलोत्पादन की गहनता के साथ–साथ उस क्षेत्र में बहु–शस्यीय क्षेत्र की बहुलता का द्योतक है, अर्थात कृषित भूमि के सन्दर्भ में फसल बोयी गयी भूमि का अधिक होना शस्य क्रम गहनता का प्रतीक है।[7] शस्य क्रम गहनता किसी क्षेत्र के कृषि विकास स्तर के सूचक के रूप में ली गई है।

जनपद प्रतापगढ़ में शस्य क्रम गहनता

क्रमांक	विकासखण्ड का नाम	शस्य क्रम गहनता
1	कालाकांकर	165.49
2	बाबागंज	168.49
3	कुण्डा	146.64
4	बिहार	160.27
5	सांगीपुर	129.97
6	लालगंज	143.04
7	लक्ष्मणपुर	148.28
8	सद्धा चन्द्रिका	103.24
9	प्रतापगढ़ सदर	115.33
10	मान्धाता	132.49
11	मंगरौरा	139.61
12	पट्टी	152.82
13	आसपुर देवसरा	136.27
14	शिवगढ़	121.54
15	गौरा	134.81

RRIJM 2015, All Rights Reserved

16	रामपुर संग्रामगढ़	163.07
17	बाबा बेलखरनाथ	125.23
प्रतापगढ जनपद		139.81

अध्ययन क्षेत्र के 41 प्रतिशत विकासखण्डों में शस्य क्रम गहनता 135 प्रतिशत (सांगीपुर 129.97, सद्धाचन्द्रिका 103.24, प्रतापगढ़ सदर, 115.33, मान्धाता 132.49, शिवगढ़ 121.54, गौरा 134.81, बाबा बेलखरनाथ 125.23) से कम तथा 18 प्रतिशत विकासखण्डों में शस्य क्रम गहनता 135–145 प्रतिशत के मध्य (लालगंज 143.04, मंगरौरा,139.61, आसपुर देवसरा 136.27) पायी जाती है। 18 प्रतिशत विकासखण्डों में शस्य क्रम गहनता 145–155 प्रतिशत के मध्य (कुण्डा 146.64 लक्ष्मणपुर 148.28, पट्टी 152.82) मिलती है। 23 प्रतिशत विकासखण्डों में शस्य क्रम गहनता सर्वाधिक 155 प्रतिशत से अधिक (कालाकांकर 165.49, बाबागंज 168.49, बिहार 160.27, रामपुर संग्रामगढ़ 163.07) पायी जाती है।

सिंचाई :–

स्वतन्त्रता के उपरान्त अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई प्रविधि में आशातीत परिवर्तन हुये। यहाँ सिंचाई के साधनों जैसे कूप, रहट, कूड़, चरखी, और तालाब (चरस, बेड़ी) अब लुप्तप्राय होते जा रहे हैं। सन् 2008 में प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि जनपद प्रतापगढ़ में कुल कृषित भूमि का 52.36 प्रतिशत भाग पर सिंचित साधनों द्वारा सिंचाई की जाती है।

जनपद प्रतापगढ़ में विकासखण्डवार विभिन्न साधनों द्वारा सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत

क्र0	विकासखण्ड का नाम	नहर	राजकीय नलकूप	निजी नलकूप	कुँआ	तालाब	अन्य
1	कालाकांकर	74.88	0.54	24.04	0.01	0.51	–
2	बाबागंज	75.86	0.01	23.38	0.08	0.54	–
3	कुण्डा	85.16	0.44	13.91	0.02	0.45	–
4	बिहार	80.86	0.78	17.80	0.05	0.47	–
5	सांगीपुर	18.52	0.07	80.83	0.07	0.49	–
6	लालगंज	48.39	11.29	39.66	0.04	0.76	–
7	लक्ष्मणपुर	56.93	0.62	41.54	0.42	0.47	–
8	सद्धा चन्द्रिका	76.76	0.96	21.55	0.20	0.51	–
9	प्रतापगढ़ सदर	13.74	0.27	65.44	0.13	0.39	–
10	मान्धाता	35.04	0.01	64.70	0.04	0.19	–
11	मंगरौरा	19.71	0.01	79.97	0.01	0.22	–
12	पट्टी	26.19	0.01	53.34	0.01	0.41	–
13	आसपुर देवसरा	19.60	0.01	59.90	0.04	0.37	–
14	शिवगढ़	19.95	0.31	49.31	0.04	0.36	–
15	गौरा	29.07	0.73	69.96	0.03	0.18	–
16	रामपुर संग्रामगढ़	61.82	0.01	27.86	0.04	0.24	–
17	बाबा बेलखरनाथ	16.30	0.22	62.74	0.06	0.21	0.01
प्रतापगढ़ जनपद		22.98	0.21	27.94	0.03	0.19	0.01

स्रोत : सांख्यिकी पत्रिका,

अध्ययन क्षेत्र में नलकूपों द्वारा सिंचित क्षेत्र में निम्न वर्ग (30 प्रतिशत से कम) के अन्तर्गत 35 प्रतिशत विकास खण्ड (कालाकांकर, कुण्डा, बाबागंज, रामपुर संग्रामगढ़, बिहार, सद्धा चन्द्रिका) आते हैं। मध्यम वर्ग (30–50 प्रतिशत) के अन्तर्गत 18 प्रतिशत विकास खण्ड (शिवगढ़, लालगंज, लक्ष्मणपुर) सम्मिलित हैं। उच्च वर्ग (50–70 प्रतिशत) के अन्तर्गत 29 प्रतिशत विकास खण्ड (मान्धाता, प्रतापगढ सदर, बाबा बेलखरनाथ, पट्टी, आसपुर देवसरा) और सर्वोच्च वर्ग (70 प्रतिशत से अधिक) के अन्तर्गत 18 प्रतिशत विकासखण्ड (सांगीपुर, मंगरौरा, गौरा) सम्मिलित हैं।

उद्योग धन्धे :–

राज्य में 39 पिछड़े जिलों में से प्रतापगढ़ भी एक है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 3717 वर्ग किमी0 है। सन् 2001 के आँकड़ों के अनुसार प्रतापगढ़ जनपद की कुल जनसंख्या 2731174 है। जनसंख्या का घनत्व 735 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है, जो राज्य के जनसंख्या घनत्व 690 की तुलना में अधिक है। यहाँ की कुल आबादी का 33.8 प्रतिशत भाग नगरीय है। कृषि पर आधारित जनसंख्या का प्रतिशत 66.2 है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व इस जनपद में कुटीर एवं लघुस्तरीय क्षेत्र में केवल गुड़, खाड़सारी, बीड़ी, सुगन्धित तेल, हुक्का, तम्बाकू, आटा चक्की, ईट भट्ठा, खादी कपड़ा, चिरागी तेल, चर्म कला, चूना, लोहारगीरी, डलिया, कालीन बुनाई, मुद्रण, कारीगरी के कार्य आदि की ही छोटी–छोटी इकाइयाँ स्थापित थी। वही अब सन् 2009 तक लघुस्तरीय क्षेत्र में निम्न प्रकार की इकाइयों को स्थाई रूप से पंजीकरण किया जा चुका है। जो निम्न तालिका से स्पष्ट है –

विभिन्न प्रकार की संस्थाओं के अधीन कार्यशील औद्योगिक इकाइयों की संख्या

क्र0	उद्योग का नाम	संचालित					
		पंचायत द्वारा	क्षेत्र समिति द्वारा	औद्योगिक सहकारी समिति द्वारा	पंजीकृत संस्थाओं द्वारा	व्यक्तिगत उद्योग –पतियों द्वारा	कुल योग
1	2	3	4	5	6	7	8
1	खादी उद्योग	–	–	18	6	2570	2594
2	लघु उद्योग इकाइयाँ	–	–	–	2	152	154
2.1	इंजीनियरिंग	–	–	9	–	505	514
2.2	रासायनिक	–	–	–	–	221	221
2.3	विधायन	–	–	–	–	780	780
2.4	हथकरधा	–	–	406	–	1025	1431
2.5	रेशम	–	–	–	–	–	–
2.6	नारियल की जटा	–	–	–	–	–	–
2.7	हस्त शिल्प	–	–	29	–	155	184
2.8	अन्य	–	–	–	–	3683	3683
3	2.1 से 2.8 तक	–	–	444	–	6369	6813
	योग ग्रामीण एवं लघु उद्योग	–	–	462	8	9091	9561
4	कार्यरत व्यक्तियों की संख्या	–	–	119	24	5394	5547
5	लघु उद्योग इकाइयों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या	–	–	468	–	6501	6969
6	ग्रामीण एवं लघु उद्योग में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या	–	–	587	34	11895	12516

स्रोत : सांख्यिकीय पत्रिका

इस प्रकार जनपद में कुल 9561 लघु औद्योगिक इकाइयों की स्थापना हुई, जिसमें 62706 औसत दैनिक कार्यरत श्रमिक एवं कर्मचारियों को रोजगार प्राप्त हुए हैं। जनपद में हस्तशिल्प के अन्तर्गत कालीन उद्योग भी विकासोन्मुख है।

पशुधन : वितरण घनत्व, कार्यरत पशु एवं अन्य पशु :–

जनपद प्रतापगढ़ कृषि प्रधान क्षेत्र है। अतः यहाँ की शत– प्रतिशत कृषि आधुनिक कृषि यन्त्रों तथा पशुओं पर आधारित है और जनपद का प्रत्येक ग्रामवासी कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी करता है। इस प्रकार पशुओं के वितरण का मानव वितरण के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। और यहाँ पशुओं का मूल्यांकन कृषिगत भूमि के सम्बन्ध में किया गया है। जनपद में उत्पन्न भेड़ एवं बकरियों के बालों का उपयोग वाराणसी में कालीन तथा कम्बल बनाने में किया जाता है। इसी प्रकार सुअर का बाल आर्थिक दृष्टि से बहुत ही उपयोगी होता है। क्योकि उसके बाल से जूता पालिस करने हेतु ब्रस एवं कपड़ा झाड़ने/सफाई हेतु ब्रश को बनाया जाता है। जनपद में कुक्कुट एवं पक्षियों के पालन एवं विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है।

परिवहन तन्त्र :–

किसी देश या क्षेत्र के आर्थिक विकास एवं समृद्धि में यातायात के साधनों का महत्वपूर्ण योगदान है। परिवहन मानव के सभी क्रिया–कलापों यथा–सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पक्ष को नियन्त्रित एवं प्रभावित करता ।अध्ययन क्षेत्र एक सपाट मैदान है अतः यहाँ रेलवे लाइन एवं सड़क मार्गों का काफी विकास मिलता है। अध्ययन क्षेत्र में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 3323 किमी0 है, जिसमें लोक निर्माण विभाग द्वारा 2836 किमी0 स्थानीय निकाय द्वारा 343 किमी0 तथा शेष अन्य विभागों द्वारा 144 किमी0 बनवाई गयी है। पक्की सड़कों की सर्वाधिक लम्बाई 263 किमी0 विकासखण्ड मंगरौरा में एवं सबसे कम लम्बाई 45 किमी0 बाबा बेलखरनाथ विकासखण्ड में पायी जाती है। एक हजार से कम जनसंख्या वाले ग्रामों में सड़कों की कुल लम्बाई 1069 किमी0 है जिसमें सर्वाधिक 98 किमी0 मंगरौरा विकासखण्ड में एवं सबसे कम 16 किमी0 बाबा बेलखरनाथ विकासखण्ड में है । एक हजार से अधिक एवं 1499 से कम वाले ग्रामों में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 415 किमी0 है। इसी तरह 1500 से अधिक वाले ग्रामों में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 468 किमी0 है जिसमें सबसे अधिक कुण्डा एवं बिहार विकासखण्ड में 45 किमी0 एवं सबसे कम 2 किमी0 बाबा बेल्खरनाथ विकासखण्ड में है।

मानव अधिवास :–

मनुष्य भूमि पर जिन स्थानों को निवास के लिये चुन लेता है और निवास के लिये मकान, भवन तथा झोपड़ी आदि का निर्माण करता है उसे मानव अधिवास या बस्ती कहते हैं। अधिवास सांस्कृतिक भू–दृश्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है जो मानव की परम्परा तथा संस्कृति द्वारा निर्धारित होता है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है जो प्राकृतिक वातावरण के साथ सामंजस्य करके एक सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करता है। निवास के लिए निर्मित मकानों के अतिरिक्त कल कारखानों तथा फैक्ट्रियों की बिल्डिंग, सरकारी कार्यालय,

शैक्षणिक संस्थाओं की इमारतें व भवन आदि भी आवास के अन्तर्गत आते हैं। इस प्रकार प्रत्येक अधिवास अपना पृथक अस्तित्व रखता है। आकार की दृष्टि से अधिवासों को दो वर्गों में रखा गया है

क. ग्रामीण अधिवास।

ख. नगरीय अधिवास।

(क) ग्रामीण अधिवास :–

जिन अधिवासों में अधिकतर कृषक वर्ग निवास करते हैं और अपना जीविकोपार्जन कृषि तथा पशुपालन से करते हैं उन्हें ग्रामीण अधिवास कहते हैं।[10] इस प्रकार ग्रामीण अधिवास वे स्वरूप हैं जिनका निर्माण मानव भूमि से प्राथमिक उत्पादन प्राप्त करने के लिये करता है। अध्ययन क्षेत्र में प्रधानतः ग्रामीण क्षेत्र है। कुल जनसंख्या का 94.70 प्रतिशत भाग गाँवों में निवास करता है। पूरे जनपद में 2182 आबाद ग्राम एवं 37 गैर आबाद ग्राम हैं जिनका विकास खण्डवार विवरण दिया गया है।

प्रति परिवार औसत आकार–ग्रामीण 5.6 है जबकि नगरीय 5.9 है। यहाँ का ग्रामीण अधिवास सघन एवं अर्द्ध सघन प्रकार का है। इनायत अहमद (1976) ने उत्तर प्रदेश के गांगेय मैदान के ग्रामीण अधिवासों के प्रकारों का अध्ययन करते समय इस क्षेत्र के अधिवासों को सघन अधिवास के अन्तर्गत रखा है। उपजाऊ मिट्टी एवं जल संसाधन की उपलब्धता के कारण ही क्षेत्र में अधिवासों का विकास पाया जाता है।

(ख) नगरीय अधिवास :–

नगरीकरण की दृष्टि से जनपद प्रतापगढ़ अत्यन्त ही पिछड़ा है। इसकी 5.29 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 50.74 वर्ग किमी0 है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 52.02 प्रतिशत पुरुष तथा 47.98 प्रतिशत महिलायें पायी जाती हैं। कुल नगरीय जनसंख्या में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों का प्रतिशत 11.29 है। नगरीय क्षेत्र की साक्षरता 74.73 प्रतिशत है जिसमें सर्वाधिक साक्षरता टाउन एरिया बेल्हा प्रतापगढ़ (82.16 प्रतिशत) और सबसे कम (60.42 प्रतिशत) टाउन एरिया प्रतापगढ़ में पाया जाता है।

कुल नगरीय क्षेत्र में 06 पुलिस स्टेशन, 59 सस्ते गल्ले की दुकान, 07 बीज गोदाम, 05 शीत गृह, 03 क्रय–विक्रय समितियाँ, 05 उर्वरक विक्रय केन्द्र, 04 पशु चिकित्सालय, 12 मान्टेसरी स्कूल, 99 प्राथमिक विद्यालय तथा 36 उच्च प्राथमिक विद्यालय पाये जाते हैं।

सन्दर्भ –

1	जिला गजेटियर	जनपद प्रतापगढ़ उत्तर–प्रदेश, 1975,
2	एल0पी0शर्मा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल	मध्यकालीन भारत (1000ई0पू0–1761 ई0पू0) अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा, 1999,
3	जनपदीय विकास पुस्तिका	जनपद प्रतापगढ़ उत्तर–प्रदेश, वर्ष 2006
4	राम चन्द्र तिवारी	अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भण्डार, इलाहाबाद, 2005
5	अहमद ई0	रुरल सेटिलमेन्ट टाइप्स इन उत्तर–प्रदेश (यूनाइटेड प्राविन्स आफ आगरा एण्ड अवध) 1976, सम एस्पेक्ट्स इण्डिया ज्योग्राफी, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद।

RRIJM 2015, All Rights Reserved